P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-5* August- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

शास्त्रीय नृत्य शैली कथक : उद्‌गम एवं विकास

सिम्मी
इंचार्ज,
डांस विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय,
पटियाला

सारांश

कथक भारत की शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक है। कथक कथा या कहानी को वाचने वालों को कहा जाता था। प्राचीन समय में मन्दिरों में कथा वाचन की प्रथा थी। बाह्मण लोग मंदिर में रोजाना भजन कीर्तन के साथ–साथ पुराणों, ग्रंथों आदि में से कथा वाचन के कथानक लेकर उन्हें भक्ति भावपूर्ण ढंग से गाते तथा नृत्य करते। भारत में एक ऐसा समुदाय भी रहा है जो रामायण में से लव–कुश की कथा को गाकर सुनाता था उन्हें 'कुशीलव' कहा जाता था। नाट्यशास्त्र में संगीतक कौशल वाले कुश्ल वादक को कुशीलव कहा गया है। महाभारत में वन में रहने वाले ब्राह्मण और कथक लोगों के मधुर स्वर में कीर्तन, गायन करने का उल्लेख मिलता है। जब नर्तकों के समूह कृष्ण की लोलाओं को अभिनीत करते थे तब लोग उन्हें श्रृद्धापूर्वक कुछ धन आदि दे देते थे जिससे उनकी आजीविका चलती रहती थी। कृष्ण की लीलाओं को प्रदर्शित करने वाले इन लोगों को रासधारी कहा जाता था। यही लोग उत्तर प्रदेश के अलग–अलग भागों में बस गए और इनकी इस कला को 'रास नृत्य' का नाम दे दिया गया जो आगे चलकर 'कत्थक' नृत्य बना। मुग़ल काल में कथक परम्परा कत्थक बन कर बहुत परिवर्तित हुई और इसके प्रदर्शन पक्ष में गिरावट भी आ गई। कथक के विलासितापूर्ण इस स्वरूप को समाज ने अच्छी नज़रों से नहीं देखा। धीरे–धीरे इसके घराने बने और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यह कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा।

मुख्य शब्द : कथक, कत्थक नृत्य, शास्त्रीय नृत्य, काथिको।

प्रस्तावना

भारत में कथक, भरतनाट्यम, कथकलि, मणिपुरी, उड़ीसी कुचीपुड़ी, मोहिनीआट्टम शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ प्रचलित हैं। इनमें से कथक नृत्य शैली उत्तर भारत की शास्त्रीय नृत्य शैली है। जिस प्रकार भरतनाट्यम 'दासी उत्तम' परम्परा से बना उसी तरह कथक नृत्य प्राचीन परम्परा 'रास' से बना है। इस शोध पत्र में कथक शास्त्रीय नृत्य शैली का उद्‌गम, विकास व आज इस शैली के स्थापित घराने, केन्द्र तथा विश्वविद्यालय और विद्यालयों का वर्णन है। कथक नृत्य प्राचीन परम्परा 'कथा कहे सो कथिक कहावे' से पूर्णत : सम्बन्धित है। प्राचीन समय में मन्दिरों के प्रागण में धार्मिक पौराणिक कथाओं को गाकर कथावाचक अभिनीत करते थे जिन्हें ग्रंथिक, कथाकार, कथक, चारण, नट, भाट, मिरासी, कुशीलव, भरत कहा जाता था। यही 'कुशीलव' समय परिवर्तन के साथ कथक और मुगल काल में 'कत्थक' बने। जिनके नाम से यह नृत्य कत्थक नृत्य कहलाया। आज यह नृत्य भारत में ही नहीं विश्व भर में प्रसिद्धी प्राप्त कर रहा है।

साहित्यावलोकन

कथक नृत्य के क्षेत्र में अब तक अनगिनत लेखकों, शोधार्थियों ने शोध के स्तर पर कार्य किया है। कथक नृत्य में अब तक हुई अधिकतर शोध में कथक नृत्य के बारे में लिखने से पहले 'कथक' शब्द तथा कथक की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। श्री प्रताप सिंह चौधरी द्वारा लिखित पुस्तक कथक नृत्य–तथ्य और विश्लेषण(2014) में कथक नृत्य के इतिहास पर विशेष जानकारी मिलती है इसमें कथक के तीनों घरानों का वर्णन और उनके क्रियात्मक पक्ष की जानकारी भी दी गई है।. रश्मि वाजपेयी, कथक प्रसंग, (1992), डॉ. गीता रघुवीर, कथक के प्राचीन नृत्तांग, (2000), डॉ. पुरू दाधीच, कथक नृत्य शिक्षा (भाग–1) बिन्दु प्रकाशन, (1998), लक्ष्मीनारायण गर्ग, कथक नृत्य, संगीत कार्यालय, (1994) डॉ. विधि नागर,, कथक नर्तन (भाग–2)(2013), राधिका मित्तल, कथक–दीक्षा, राज पब्लिकेशनस, (2013), तीर्थ राम आज़ाद जी की पुस्तक कत्थक ज्ञानेश्वरी (2015), डॉ. नीता गहरवार –पुराणों में नृत्य के तत्व(2013), ज्ञानेन्द्र दत्त वाजपेयी

–टैक्सट बुक आफ डांस(2014), शिखा खरे – कथक, सौन्दर्यात्मक शास्त्रीय नृत्य (2005), इनके इलावा डॉ. माया टाक द्वारा लिखित पुस्तक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य (2006) नामक पुस्तक में कथक नृत्य के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। पुस्तकों के इलावा शोध कार्यों में शुभ्रा गल्होत्रा (शोधकत्री)– कथक नृत्य के विकास मे कत्थक केन्द्रों का योगदानं : विश्लेषणात्मक मूल्यांकन(2015), पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, kirandeep kaur(Researcher) - Comparative study of the kathak curriculum of indian universities with the curriculum of kathak kendra delhi (2016) punjabi universtiy patiala, प्रीती साठे द्वारा लिखित शोध–कार्य ''The Traditional legacy of Jaipur Gharana- Kothak (2010) म कथक नृत्य के इतिहास तथा इसके घरानों के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। 'संगीत' नामक मासिक पत्रिका (जून 1978), सितम्बर (1976), फरवरी (2018) अंक तथा संगना (त्रैमासिक पत्रिका), अंक अप्रैल–सितम्बर 2017 में भी कथक नृत्य की उत्पत्ति तथा विकास का विस्तृत वर्णन मिलता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र शास्त्रीय नृत्य कथक जैसी प्रस्तुती कला को लेकर बनाया गया है। आज मानव जब बहुत सभ्य हो गया है और तकनीक के नए–नए साधनों में नित परिवर्तन ला रहा है। ऐसे में मानवीय भावनाओं के प्रकटावे, उनके प्रति रूझान और आने वाली पीढ़ी को उनके बारे में जागरूक करने के उदेश्य से ही इस शोध–पत्र को लिखा गया है। पश्चिमी जगत की चकाचौंध ने नई पीढ़ी को अत्यधिक प्रभावित किया है। आज कम्पयूटरीकरण के युग में अपनी पारम्परिक धरोहर को जानना और भी जरूरी हो गया है। अपने धार्मिक पौराणिक साहित्य के दर्शन इस तरह की कला के जरिए आसानी से हो सकते है। वैर्स्टन पाप के युग में 'कथिको' परम्परा तथा इसकी जड़ों की जानकारी व अध्ययन निसंदेह नई पीढ़ी के लिए लाभप्रद हो सकती है जो इस तरह की कलाओं के प्रति उनकी जिज्ञासा को जागृत करने का कार्य भी कर सकती है।

'कथक' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कथा या कहानी को वाचने वाला कथाकार।

'कथा कहे सो कथक कहावे'

अर्थात कथा को वाचने वाले को कथक कहा जाता है। ''कथक शब्द का एक अन्य प्रर्याय है, 'कथा प्राण' अर्थात् वह वर्ग, जिसकी प्राणयात्रा कथा से चलती हो, इसे 'नाट्यवक्ता भी कहा गया है, 'एक नट' अर्थात् जो अकेला ही किसी कथा के सम्पूर्ण पात्रों का अभिनय करता हो।''[1] अर्थात कथा का अभिनय करके आजीविका चलाने वाला वर्ग–विशेष 'कथक' कहलाता है।

'''कथक' संस्कृत भाषा व्याकरण की 'कथ' धातु से निर्मित एक शब्द है इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है :–

'कथयति यः स कथकः' अर्थात कथन करे वह 'कथक' है।[2]

कथक से ही कत्थक शब्द का प्रचलन हुआ, जिसके अर्थ हैं– गाने, बजाने और नाचने वाली जाति। 'कथक' देशज भाषा का शब्द है जो 'कथक' का बिगड़ा हुआ स्वरूप है।

पालि शब्दकोशों में इसे उपदेशक के अर्थ में प्रयोग किया है। नेपाली शब्दकोश में इसका अर्थ वर्णन करने वाला या व्याख्याता है। यह अर्थ 'कथक' शब्द को मुख्यतः तीन विशिष्टताओं से जोड़ता है – कथा, अभिनय और उपदेश। यदि इन तीनों विशेषताओं को संयुक्त रूप से ग्रहण किया जाए तो 'कथक' शब्द का सम्पूर्ण व्यक्तित्व होगा कि – कथक वह व्यक्ति विशेष हैं जो लोकोपदेश के लिए अभिनय के माध्यम से कथा की प्रस्तुति करे ।[3]

'' 'नाट्यशास्त्र' के बाद शाडंगदेव का 'संगीत रत्नाकर' ही एक ऐसा ग्रंथ है, जो 'नाट्यशास्त्र' को प्रतिपादित करनेवाला संगीत का एक मात्र प्रमाणिक ग्रंथ है। यह ग्रंथ 13–वीं शताब्दी में लिखा गया। इसके नृत्याध्याय में 'कथक' शब्द का उल्लेख इस प्रकार हैः–

कथका बंदिनश्चात्र विद्यावंतः प्रियंवदाः।
प्रशंसाकुशलाश्चान्ये चतुरा सर्वभातुषु ।।

अर्थात कथक का अर्थ है, कथा कहने वाला। प्राचीन समय में कथावाचकों द्वारा मंदिरों में पौराणिक कथाएं हुआ करती थी। कथा के बाद जब कीतन होता था, तो उसमें भरत या नट लोग नृत्य किया करते थे।[4]

राजस्थान में कथक अपने को 'कथिक' कहते थे, जिसका अर्थ उनकी भाषा में इस प्रकार हैः–
क – कुमारी कन्याओं (वेश्याओं) को
थि – थिरकन अथवा नृत्य–कला सिखाने वाले,
क – कलाकार।

यह तो विदित है कि कथक के कलाकारों का कार्य कथावाचन रहा, परन्तु आगे चलकर इस कथावाचन के लिए उन्होंने नृत्य और संगीत का सहारा लिया।

कथक का शाब्दिक अर्थ 'कथन करने वाला' होता है इस तरह जिसमें कथानक को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो कथक कहलाया।

कथक में कथा या कहानी को नृत्य के माध्यम द्वारा व्यक्त करता होता है। जो मुख्तयः तीन विशिष्टताओं द्वारा अभिनीत होता है। कथा, अभिनय तथा उपदेश। कथक का शाब्दिक अर्थ है – कथन करने वाला अथवा वह नृत्य जिसमें कथानक को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो। कथा या कहानी को आकर्षक रूप से कर्णप्रिय उच्चारण द्वारा और भावाभिव्यक्त के साथ प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति प्रत्येक वर्ग में सदा प्रिय रहा है।

'कथक' शब्द का प्रयोग प्राचीन सभ्यता से चला आ रहा है, किन्तु 'कथक नृत्य' का नामकरण लगभग दो सौ वर्षें पूर्व हुआ है। 'कथक' शब्द के पारम्परिक प्रयोग से ही 'कथक नृत्य' का प्रारम्भ माना जाता है। रामायण में बाल्मीकि ऋषि को 'कुशीलन' समुदाय से सम्बन्धित बताया गया है। नाट्यशास्त्र में 'कुशीलव' का अर्थ सांगीतिक कौशल वाला कुशल वादक है। बाल्मीकि ऋषि ने भी राम के पुत्रों 'लव–कुश' को रामायण को गायन शैली में सिखाया था।

'कथक' शब्द का प्रयोग महाभारत में भी मिलता है। उसमें वनों में रहने वाले है। ब्राह्मण और कथक लोगों के मधुर स्वर में आरण्यान करने का वर्णन मिलता है।[5]

एक अन्य कथा के अनुसार शरद् पूर्णिमा को भगवान कृष्ण ने यमुना तट पर महारास रची थी। 'नटवर' कृष्ण के रास नृत्य को देखने के लिए स्वयं भगवान शिव द्वारपाल बनकर खड़े रहे। राधा कृष्ण तथा गोपियों के उस आलौकिक नृत्य ने एक नये प्रकार की नृत्य परम्परा को जन्म दिया, जिसका नाम आगे चलकर 'रास नृत्य' प्रसिद्ध हुआ । कत्थक नृत्य उसी का प्रतिरूप माना जाता है। वास्तव में भगवान कृष्ण की लीलाओं को गीत और नृत्य द्वारा प्रस्तुत करने को ही रास नृत्य कहा गया।

जब नर्तक श्री कृष्ण की लीला अभीनीत करते थे तब लोग श्रद्धा पूर्वक उन्हें कुछ धन आदि न्यौछावर के रूप में देते थे धीरे–धीरे वह प्रदर्शन उन लोगों का व्यवयाय बन गया। कृष्ण लीला प्रदर्शित करने वाले लोग 'रासधारी' कहलाते थे। उन्हीं में से कुछ लोग अलग होकर उत्तर–प्रदेश के कुछ भागों में जाकर बस गये और गायन तथा नृत्य के द्वारा 'कथा' वाचन करने लगे और यही लोग आगे चलकर कत्थक कहलाने लगे।[6]

डॉ. पुरू दाधीच की पुस्तक कथक नृत्य शिक्षा भाग–2 के अनुसार कथक नृत्य के उद्भव सम्बन्धी तीन मान्यताएं है–

1. स्वामी हरिदास जी ने जिन शिष्यों को गायन की शिक्षा दी वे गायक गन्धर्व बने और जिनकों वादन को शिक्षा दी वे किन्नर बने और जिनको नृत्य सिखाया वे कत्थक बने।
2. कथक नृत्य शैली का जन्म श्री कृष्ण की प्रेरणा से हुआ तथा इसका विकास मुगल बादशाहों तथा नबाबों के संरक्षण से हुआ। ईश्वरी जी (जिन्हें भगवान कृष्ण ने स्वप्न में नृत्य की शिक्षा देकर नृत्य की भागवत बनाने का आदेश दिया था) के एक प्रपौत्र श्री प्रकाश जी लखनऊ के नवाब आसफुदौला के राज नर्तक हुए और नटवरी नृत्य का कथक नाम इसी समय से प्रचलित हुआ है।
3. वह नृत्य जो वैष्णव धर्म के सानिध्य में विकसित हुआ शैली, तकनीक व स्वरूप में शुद्ध कथक था। कला का कथक रूप वैष्णव धर्म के प्रचार का माध्यम था।[7]

कुशीलवों, चारणों, कथकों, हरिकथा गायकों, कीर्तनियों, संतों, ढाड़ी, मिरसी और भांड़ों–नक्कालों के द्वारा ही सदियों से नृत्य की धारा उत्तर भारत में प्रवाहित होती रही है। 10 वीं शताब्दी के बाद का काल भारत में इस्लामो सभ्यता के प्रवेश व कथकों के बिखराव का काल रहा। इस नृत्य ने उस समय धर्म के क्षेत्र से निकल कर दरबार में शरण ली।[8]

कथक नृत्य के नृत्त पक्ष में पद संचालन मुस्लिम राजाओं की विशेष देन है। तथा इस प्रकार संचालन की तकनीक ईरानी नृत्यकों के प्रभाव से निकली हैं । ऐसा अनोखा पद संचालन भारत के किसी शास्त्रीय नृत्य में नहीं मिलता । मुस्लिम राजा इस तरह की सिखलाई के लिए नर्तक के हाथों में शराब का प्याला पकड़ा देते थे। और नृत्य करते समय शराब के प्याले से शराब का झलकना या गिरना एक बहुत बडा दोष माना जाता था। ऐसा होने पर नर्तक पर कोड़े बरसाये जाते थे। इस तरह कथक नर्तक के पैरों को विशेष संतुलन बन गया और पैरों की तैयारी पर विशेष ध्यान देने की परम्परा चल पड़ी। इस तरह शराब के प्याले और नृत्य के संतुलण के समन्वय ने सदाचार और धार्मिक पौराणिक नृत्य निष्ठा को चोट पहुंचाई है। सभ्य लोगों ने नृत्य के इस रूप का त्याग किया और धीरे–धीरे कथक राजदरबारी बिलासता बनकर रह गया।[9]

मुगलकाल के दरबारों में आकर कथक का रूप बिगड़ने लगा था। जहां कुछ मुगल शासकों ने कथक के स्वरूप को बिगाड़ा वहीं कुछ शासको ने इसके स्वरूप का निखारा भी। नवाब वाज़िद अली शाह के समय में संगीत व नृत्य को नया जीवन मिला। उनके समय में कथक का विशेष प्रचार–प्रसार हुआ।[10]

नवाब वाज़िद अली शाह स्वयं ढोल और ताशा ऐसा बजाते थे कि लोग मन्त्र मुग्ध हो जाते थे। वह मुर्हरम के 7वें दिन भटिया बुर्ज की आसमानी कोठी से ताशा बजाते हुए निकलते थे और फिर रोश्न चौंकी में शहनाई वादन होता था। वाजिद अली शाह संगीत के साथ–साथ नृत्य के भी शौकीन थे और खुद रास नृत्य करते थे जिसमें वे खुद कृष्ण बनकर नर्तकियों को गोपियाँ बनाकर घण्टों नृत्य करते थे। उन्होंने सैकडों ठुमरियों की रचना की।[11]

मुगल काल में कथक के तकनीकी पक्ष (क्रियात्मक) में भी बहुत सा बदलाव आया। इनके नाम उर्दू और फारसी शब्दों में तबदील कर दिए गए। जैसे – प्रस्तुती को अदा, स्तुती को सलामी, आगमन को आमद में बदल दिया गया । कई भक्तिरस प्रधान गीतों को मुबारकबादी बोलों में बदला गया। [12] वाज़िद अली शाह लखनऊ के बादशाह थे उनकी सरपरस्ती में बहुत से कथक नृत्यकों ने कथक नर्तकों को अपनी आजीविका का साधन बनाया । वाज़िद अली शाह ने नृत्य और संगीत के प्रचार –प्रसार के लिए एक रहसाखाना बनवाया था जिसका दूसरा नाम 'इन्द्र सभा' भी था। यहां नौटंकी स्वाँग आदि भी खेले जाते थे। वाज़िद अली शाह ने 'रहस' की पेशकारीयाँ जो रासलीला के भारतीय विषयों पर आधारति थी। इसी तरह राजस्थान के राजाओं के यहां हिन्द राजाओं की सरपरस्ती में गुनीजन खान भी खोले गए। राजस्थान में किशनगढ के राजा सावन्तसिंह का कथक नृत्य को विशेष योगदान रहा है। उन्हें 'नागरी दास' भी कहा जाता था। उन्होंने नृत्य आधारित 77 पुस्तकें लिखी। उनकी प्रकाशित पुस्तकों को 'नागरी सामुच्य' भी कहा जाता है। उन्होंने राधा–कृष्ण के श्रृंगार रस प्रधान कथानकों को छंदबद्ध रूप में लिखा है। उनकी कई पद्य बद्ध रचनाएं आज भी कथक में कवित्त के रूप में प्रयुक्त होती है। किशनगढ़ के राजा 'नृत्यगोपाल' (कृष्ण) की ही कुल देवता के रूप में पूजा करते थे।[13] वाजिद अली शाह ने कुछ नृत्य नाटिकाओं को ईरानी पृष्ठ भूमि में भी चित्रित किया इनमें विशेष मंचसॅजा वेशभूषा तैयार की जाती थी। दादरा, ठुमरी और गज़ल के लिए सिकन्दर मिर्ज़ा, कादर पिया, ललन पिया और अख्तर पिया संगत करते थे। वाजिद अली शाह को नृत्य कला का विशेष ज्ञान उन्होंने कन्हैया नाम के एक नर्तक को कथक की पूर्ण सिखलाई दी। वाजिद अली शाह दो करोड़ रूपये की लागत से मशहूर केसर महल बाग बनवाया जहाँ नर्तकों की सिखलाई के लिए 'परियों को खाना' बनवाया गया

था। कथक के उच्च कोटि के नर्तक व गुरू कालिका प्रसाद ,बिन्दादीन महाराज को विशेष तौर पर आपकी सरपरस्ती मिली जिन्होंने आगे चलकर कालिका प्रसाद बिन्दादीन घराना बनाया जो आज कथक के लखनऊ घराने के नाम से विख्यात है। इसी तरह जयपुर में हिन्दु राजाओं की सरपरस्ती में भानू जी ने जयपुर घराने की नींव रखी थी। जो आज जयपुर घराने के नाम से विख्यात है। जयपुर घराने से पहले राजस्थान में श्यामलदास घराने के नाम से एक भी अलग घराना विख्यात था जो बाद में दो भागों में बॅट गया एक जयपुर घराना कहलाया और दूसरा जानकी प्रसाद घराना । जयपुर घराने का विकास राजस्थान में हुआ और जानकी प्रसाद घराना बनारस में प्रफुल्लित हुआ।[14] इसी तरह रायगढ़ में महाराज चक्रधर सिंह ने कथक नृत्य को सरपरस्ती दी और अपने दरबार में कितने ही नृत्य कलाकारों और नृत्य गुरूओं को आश्रय देकर कथक में रायगढ़ परम्परा के नाम से एक विशेष परम्परा को जन्म दिया। राजाचक्रधर स्वयं एक उच्चकोटि के संगीतज्ञ व एक कुशल नर्तक होने के साथ–साथ सफल तबला बादक और पखावज बादक भी थे। रायगढ में संगीत और नृत्य के अनेकों उत्सव होते रहते थे परन्तु वार्षिक उत्सव जैसे गणेश चर्तुथी, दशहरा, होली, दीपावली विशेष तौर पर मनाये जाते थे। लखनऊ व जयपुर दोनों ही घराना के कथक नर्तक व गुरूजनों को वे विशेष रूप से बुलाते और अपने यहाँ के नर्तकों को उनसे शिक्षा दिलवाते थे। कथक नृत्य की इस विशेष परम्परा को रायगढ़ घराना भी कहा जाता है जो अपनी अलग पहचान रखता है।[15]

समय परिवर्तन के साथ कथक के इन घरानों ने भी अपना स्वरूप बदला। आजादी के पश्चात भारतीय सरकार द्वारा कथक नृत्य की शिक्षा के लिए केन्द्रों की स्थापना की गई। आज भारत में कथक के निम्नलिखित सिखलाई केन्द्र तथा विश्वविद्यालय और विद्यालय स्थापित हैं :–

कथक केन्द्र – नई दिल्ली
कथक केन्द्र – जयपुर
भातखण्डे संस्थान – लखनऊ
कथक केन्द्र – लखनऊ
राष्ट्रीय कथक संस्थान – लखनऊ
सरकारी म्यजिक कॉलेज – हैदराबाद
भारतीय कला केन्द्र – नई दिल्ली
गंर्धव महाविद्यालय – नई दिल्ली
कलाश्रम संस्थान ऑफ पंडित बिरजू महाराज – नई दिल्ली
सरकारी गर्लज़ कॉलेज – इन्दौर
नटराज संगीत कलाकेन्द्र – वाराणसी
कला निकेतन – नागपुर
भारतीय विद्या भवन – पुणे
शंकर कथक सेंटर – कोलकात्ता
नटवरी जानकी प्रसाद एकडमी आफ कथक – मुम्बई
नृत्य कला केन्द्र – मुम्बई
अर्चना नृत्याल्य – मुम्बई
उमा डोगरा स्कूल आफ कथक – मुम्बई
माधव म्यजिक कॉलेज – ग्वालियर
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय– वाराणसी
महाराज सियाजीराव विश्वविद्यालय – बड़ौदा
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय – कुरूक्षेत्र
सरकारी कॉलेज लड़किया – पटियाला
सरकारी कॉलेज लड़किया – अमृतसर
सरकारी कॉलेज लड़कियां सेक्टर 11 – चण्ड़ीगढ
सरकारी कॉलेज लड़कियां सेक्टर 42 – चण्ड़ीगढ
ऐ.पी.जे. कॉलेज – जालंधर
बी.डी. आर्य कॉलेज लड़कियां – जालंधर
सरकारी कॉलेज लड़कियां – अमृतसर
रविन्द्र चक्रधर नृत्य केन्द्र – भोपाल
इन्द्रियकला संगीत विश्वविद्यालय – खैरागढ़
रविन्द्र भारतीय विश्वविद्यालय – कोलकात्ता

आज ये केन्द्र व विश्वविद्यालय कथक के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान दे रहे हैं। इनके प्रयत्नों से कथक ना केवल भारत बल्कि विदेशों में भी प्रफुल्लित हो रहा है।

निष्कर्ष

यह शोध–पत्र उत्तर भारत की कथक नृत्य शैली पर आधारित है। इस शोध–पत्र को लिखते समय कुछ तथ्य सामने आए जिनकी जानकारी नृत्य विद्यार्थियों को होनी चाहिए। कथक जैसी शास्त्रीय नृत्य शैली जो नियमबद्ध नृत्य शैली है उसके उद्गम का सम्बन्ध एक लोक नाट्य शैली 'रास' से है तथा दूसरी तरफ इसका सम्बन्ध धार्मिक पौराणिक ग्रंथों में निहित भगवान कृष्ण तथा राम की लीलाओं से है। कथक नृत्य का मंदिरों के प्रांगन से विश्व के प्रोसीनियम थियेटरों तक के सफर में इसमें क्या–क्या बदलाव आए इसका वर्णन इस शोध–पत्र में है। कथक नृत्य में प्रयुक्त शब्दावली मुगल काल में स्तुति से सलामी, आगमन से आमद, उठान जैसे उर्दू और फारसी के शब्दों में परिवर्तित हुई फिर भी सैकड़ों सालों के इस सफर मे कथक ने अपने विशुद्ध स्वरूप को खण्डित नहीं होने दिया। बदलावों को सहज स्वीकार करते हुए भी अपने भक्ति भावना से ओतप्रोत भाव अंग के भजनों, वन्दना, गत भाव आदि की गरिमा को उसी तरह बरकरार रखा और आज का कथक फिर अपने ओज़पूर्ण अन्दाज़ से दुनिया भर में प्रसिद्धी प्राप्त कर रहा है। पं. बिरजू महाराज जैसे नृत्य गुरू आज 'नृत्य सम्राट' की उपाधि से ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। कथक नृत्य में भारत सरकार द्वारा कई उपाधियां दी जाती हैं। कथक मंदिरों से राजदरबारों फिर घरानों से होता हुआ विश्वविद्यालयों में शोध का विषय बन कर डी. लिट. जैसी डिगिया प्रदान कर रहा है। आज इस नृत्य के इस सफर को निसंदेह शोध के स्तर पर संकलित करना अनिवार्य है ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए वह मील का पत्थर साबित हो।

संदभ ग्रन्थ सूचो

1. *वाजपेयी, रश्मि,(1992) कथक प्रसंग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ – 11*
2. *डॉ. रघुवीर, गीता(2000)कथक के प्राचीन नृत्तांग,पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, पृ–7*
3. *डॉ. दाधीच, पुरू (1998), कथक नृत्य शिक्षा (भाग–1) बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर,पृ–87*

4. डॉ. गर्ग, लक्ष्मीनारायण(1994), कथक नृत्य, संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ–29
5. डॉ. नागर, विधि,(2013)कथक नर्तन (भाग–2), बी. आर. धिमज़, दिल्ली, पृ –15
6. 'आजाद', पण्डित तीर्थ राम (2015)कथक ज्ञानेश्वरी, नटेश्वर कला मंदिर, दिल्ली, पृ– 221
7. डॉ. दाधीच, पुरू(1998), कथक नृत्य शिक्षा (भाग–1) बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर, पृ– 88–89
8. डॉ. दाधीच, पुरू(1998), कथक नृत्य शिक्षा (भाग–1) बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर, पृ– 83
9. डॉ. नन्दा, सनेह (2009), नत्तसार, लोकगीत प्रकाशन, चण्डीगढ, पृ. 77
10. मित्तल, राधिका (2013), कथक–दीक्षा, राज पब्लिकेशनस, नई दिल्ली, पृ. 72
11. भारती, श्रीमती (2012–13), नृत्य में पारंपरिक गायन–शैली 'धुपद',नव प्रिंटरस एंड डिजाईनर, जालंधर, पृ. 127
12. Ms. Preeti Sathe (Researcher), Dr. Jagdish Gangani (Supervisor) April 2010, The Maharaja Sayajirao Univesity Of Baroda For The Award Of The Degree Of Doctor Of Philosphy In Dance (Kathak) Page. 7
13. चौधरी, श्री प्रताप सिंह (2014), कथक नृत्य–तथ्य और विश्लेषण, रचना प्रकाशन, पब्लिकेशन, जयपुर, पृ. 134
14. गर्ग, लक्ष्मीनारायण (1994), कथक नृत्य, संगीत कार्यालय, हाथरस, संस्करण 6 , पृ. 36
15. डॉ. टाक, माया (2006), ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 206–210